ISSN (Online) 2582-9327

IJARSCMT

International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology

Impact Factor: 5.781

Volume 3, Issue 2, February 2022

''ग्रामीण महिलाओं की प्रस्थिति पर संचार माध्यमों का प्रभाव''

(रीवा जिले के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. मोहम्मद परवेज

(अतिथि विद्वान समाजशास्त्र)

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, (म.प्र.)

सारांश: इक्कीसवीं शताब्दी के आरम्भ में जब संचार का विस्तृत विस्तार हुआ जिससे महिलाओं में जागरूकता बढ़ने लगी तो वे सशक्त होने लगी। संचार माध्यमों ने महिलाओं को उनके अधिकार दिलाने एवं उनको सशक्त बनाने में महत्त्वूर्ण भूमिका निभा रहा है। ग्रामीण महिलाओं की प्रस्थिति में बदलाव लाने में संचार माध्यमों का बहुत बड़ा योगदान है। संचार माध्यम ने आज पुरे विश्व को बदल दिया है, इसी क्रम में ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाली महिलाओं के प्रति मानक मूल्यों में भी परिवर्तन आया है, जिन्हें कल तक केवल उपभोग की वस्तु माना जाता था आज वही महिलायें जागरूक होकर अपने अधिकारों की माँग कर रही हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में ग्रामीण महिलाओं की वर्तमान प्रस्थिति का आकलन करने के साथ महिलाओं के सशक्तिकरण में संचार माध्यमों की भूमिका का सर्वेक्षण करना तथा ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक व मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण सम्बन्धी तथ्यों को जानने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्दः महिला, प्रस्थिति, संचार, ग्रामीण, भूमिका, अधिकार

प्रस्तावनाः

भारत की संस्कृति विविधता में एकता को बनाये रखने वाली शान्तिपूर्ण, सौहार्दपूर्ण एवं समरसता वाली संस्कृति है। जनगणना–2011 के अनुसार भारत की जनसंख्या विश्व में चीन के बाद दूसरे स्थान पर है, इस जनसंख्या कीलगभग 68.80 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण परिवेश में रहती है। भारत की कुल जनसंख्या का 48. 27 प्रतिशत जनसंख्या महिलाओं की है। इस प्रकार सम्पूर्ण जनसंख्या का दो तिहाई जनसंख्या ग्रामीण अंचलो में निवास करती है, ग्रामीण जनसंख्या की आधी आबादी महिलाओं की है। इस प्रकार भारत की आधी आवादी जो गाँवों में निवास करती है को छोड़कर हम विकास की कल्पना नहीं कर सकते हैं, महिलायें राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका निभाती हैं। विश्व स्तर पर किसी भी देश के आँकड़ों का विश्लेषण करेंगे तो हम पायेंगे की वही राष्ट्र विकसित है, जिस राष्ट्र में महिलायें पुरुषों के समान कार्य करती है एवं उन्हें पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त है।**मनु** के अनुसार ''जहाँ महिलाओं की दूर्दशा होती है वहाँ सम्पूर्ण परिवार का विनाश हो जाता है किन्तु जहाँ वे सुखी है वहाँ परिवार सदैव समृद्धि को प्राप्त करता है।''

ISSN (Online) 2582-9327
IJARSCMT
International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology
Impact Factor: 5.781
Volume 3, Issue 2, February 2022

ग्रामीण महिलाओं की प्रस्थिति बहुत निम्न थी संसाधनों का अभाव, आर्थिक, सामाजिक, राजनितिक, मनोवैज्ञानिक एवं तकनीकी स्तर पर भी उन्हें कोई अधिकार प्राप्त नहीं थे। ग्रामीण परिवेश की महिलायें चहारदीवारी के अन्दर बन्द थी, उन्हें किसी भी प्रकार की कोई स्वतंत्रता प्राप्त नही था। उत्तर वैदिक काल से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व तक महिलायें केवल उपभोग की वस्तु थी। उनको किसी भी प्रकार का कोई अधिकार प्राप्त नहीं था। स्वतंत्रता के पश्चात् विभिन्न कानूनों के माध्यम से महिलाओं को उनके अधिकार दिये गये, लेकिन अभी जागरूकता के अभाव में महिलायें सशक्त नहीं हो सकी हैं। इक्कीसवीं शताब्दी के आरम्भ में जब संचार का विस्तृत विस्तार हुआ जिससे महिलाओं में जागरूकता बढ़ने लगी तो वे सशक्त होने लगी। संचार माध्यमों ने महिलाओं को उनके अधिकार दिलाने एवं उनको सशक्त बनाने में महत्त्वूर्ण भूमिका निभा रहा है। **एस0सी0 दूबे** के अनुसार ''मनुष्य जैविकीय प्राणी से सामाजिक प्राणी तब बनता है जब वह संचार द्वारा सांस्कृतिक अभिवृत्तियों, मूल्यों और व्यवहार, प्रकारों को आत्मसात कर लेता है।''

ग्रामीण महिलाओं की प्रस्थिति में बदलाव लाने में संचार माध्यमों का बहुत बड़ा योगदान है। संचार माध्यम ने आज पुरे विश्व को एवं ग्राम में बदल दिया है, जिससे ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाली महिलायें जो केवल उपभोग की वस्तु थीं, आज जागरूक होकर अपने अधिकारों की माँग कर रही हैं। आज महिलायें प्रत्येक क्षेत्र में एवं प्रत्येक स्तर पर पुरुषों से कमजोर नहीं हैं। महिलाओं को केवल मनोवैज्ञानिक स्तर पर कमजोर कर, उनका अब तक शोषण होता रहा। संचार क्रान्ति ने महिलाओं को सशक्त बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाया है। **वोरडेनेव** के अनुसार 'यदि ग्रामीण विकास की सम्पूर्ण स्थिति की समीक्षा की जाय तो कहा जा सकता है कि ग्रामीण विकास में संचार माध्यमों की महत्त्वूर्ण भूमिका है। संचार के नये उपागमों को अपनाकर ग्रामीण विकास के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन हुए हैं। प्रत्येक देश की अपनी निजी संस्कृति होती है जो उसे अन्य देशों की संस्कृति से भिन्न करती है। भारत की संस्कृति विभिन्नता में एकता को बनाये रखने वाली, कृषि आधारित आर्थिक व्यवस्था पर निर्भर करती है। कृषि आधारित अर्थव्यवस्था के कारण भारत की लगभग दो तिहाई जनसंख्या गाँवों में निवास करती है।

भारतीय समाज में आधुनिक काल में महिला की स्थिति तथा उससे जुड़े हुए प्रश्नों की चर्चा करने से पूर्व, हम इतिहास के पृष्ठों पर महिलाओं की प्रस्थिति कैसी थी यह समझना आवश्यक है। सामाजिक जीवन कभी भी देश व काल के प्रभाव से अछूता नहीं रह सकता है। प्राचीन भारतीय समाज में महिला का दर्जा बहुत ऊँचा था– ऐसी मान्यताओं को यथार्थ की कसौटी पर कसने की आवश्यकता है। जब प्राचीन काल में महिलाओं की स्थिति एवं रहन–सहन का स्तर ऊँचा था तो उनकी प्रस्थिति का ह्रास कब हुआ और क्या कारण था कि महिलायें निरन्तर अपनी प्रस्थिति को खोती गई।

वर्तमान वैश्विक परिवेश में मीडिया एक प्रभावशाली साधन है जिसकी पहुँच करोड़ों लोगों तक है। आधुनिक तकनीकि का महिला एवं पुरुष, युवा और वृद्ध सभी पर प्रभाव पड़ा है। प्रिंट मीडिया, रेडियो, टी0वी0, सिनेमा, फिल्में, इण्टरनेट, सोशल मीडिया, ये सभी मीडिया के घटक हैं। मीडिया ने महिलाओं को प्रत्यक्ष या

ISSN (Online) 2582-9327
IJARSCMT
International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology
Impact Factor: 5.781
Volume 3, Issue 2, February 2022

अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है। देश की समाजिक–आर्थिक विकास के लिये ग्रामीण महिला सशक्तीकरण अति आवश्यक है और इसी कारण देश के विकास के लिये ग्रामीण महिला सशक्तीकरण ग्रामीण विकास के लिये सर्वाधिक महत्त्वूर्ण है। महिलाओं का सशक्तीकरण, जीवन के सभी क्षेत्रों में सतत् विकास, पारदर्शी तथा उत्तरदायी सरकार एवं प्रशासन के लिये आवश्यक है। पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं एवं पुरुषों की समान भागीदारी ग्रामीण समाज एवं देश के संतुलित विकास को बढ़ावा देगी, जिससे अन्ततः भारतीय लोकतंत्र को मजबूती मिलेगी एवं भारत का विकासतेजी से हो सकेगा। ग्रामीण महिलाओं का सभी स्तरों पर निर्णय एवंनीति–निर्माण तथा क्रियान्वयन में सक्रिय सहभागिता के बिना समानता, सामाजिक न्याय एवं लोकतांत्रिक आदर्शो की प्राप्ति नहीं हो सकेगी।

साहित्य शोध समीक्षाः

ओम प्रकाश सिंह द्वारा लिखित 'संचार माध्यमों का प्रभाव' सन् 1993 में क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित है। इस पुस्तक में संचार माध्यमों के प्रभाव से भारत के परम्परागत समाज में आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में बदलाव आया है। संचार माध्यम सरकार के योजनाओं के क्रियान्वयन में सहयोगी भूमिका निभाता है। संचार का विकास के साथ इसकी उपयोगिता का भी विस्तृत चर्चा की गई है। ग्रामीण समाज में संचार के पहुँचने के माध्यम एवं बदलाव को दर्शाते हुए राजनैतिक जागरूकता पर विशेष जोर दिया गया है।

डॉ0 एम0एम0 लवानिया द्वारा लिखित पुस्तक 'भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र' जो रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर से प्रकाशित है में भारतीय महिलाओं की प्रस्थिति (वैदिक काल से लेकर– इक्कीसवीं सदी तक) की चर्चा की गई है। भारतीय महिलाओं के सशक्तीकरण की इस पुस्तक में विस्तृत चर्चा की गई है। भारतीय महिलायें विभिन्न माध्यमों से निरन्तर सशक्त हो रही है। मध्यकाल में जो महिलायें दासी थी, आज वह स्वतंत्र होकर भारतीय अर्थव्यवस्था को विकसीत करने में अपना योगदान दे रही है। इसमें लैंगिक असमानता को दूर करने में भारतीय हस्तियों के योगदान की भी चर्चा की गई है। इस पुस्तक में मुख्य फोकस महिला सशक्तीकरण पर है।

शोध कार्य के प्रस्तावित उद्देश्यः

किसी भी क्षेत्र में शोध कार्य हेतु उद्देश्य का महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है, उद्देश्य शोध को निश्चित परिधि प्रदान करता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर शोधकर्त्ता ने निम्नलिखित उद्देश्य बनाये हैं –

1. ग्रामीण महिलाओं की वर्तमान प्रस्थिति का आकलन।
2. महिलाओं के सशक्तिकरण में संचार माध्यमों की भूमिका का सर्वेक्षण करना।
3. ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक व मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण सम्बन्धी तथ्यों का

ISSN (Online) 2582-9327
IJARSCMT
International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology
Impact Factor: 5.781
Volume 3, Issue 2, February 2022

आकलन करना।

4. ग्रामीण विकास से सम्बन्धित कार्यक्रमों में संचार की भूमिका का आकलन करना।
5. संचार के वर्तमान स्वरूप का आकलन।
6. ग्रामीण महिलाओं में धार्मिक व भावनात्मक विचार के स्थान पर तकनीकि व वैज्ञानिक विचार के विस्तार की समीक्षा।

उपकल्पना:

प्रस्तावित शोध किसी समस्या की अस्थाई कल्पना है जिसका परीक्षण किया जाना है। शोधार्थी उपकल्पनाओं को निर्मित करने के पश्चात् उसकी प्रमाणिकता की जाँच करता है। इस शोध प्रबन्ध में निम्न उपकल्पनाओं को शोधार्थी ने निर्मित की है–

1. संचार के माध्यमों ने ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रस्थिति को सशक्त किया है।
2. ग्रामीण महिलाओं की पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी बढ़ी है।
3. ग्रामीण महिलाओं के शिक्षा एवं स्वास्थ्य के स्तर में सुधार आ रहा है।
4. ग्रामीण परिवेश में संयुक्त परिवार के स्थान पर एकल परिवार की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है।
5. ग्रामीण महिलाओं में राजनैतिक सशक्तिकरण आ रहा है।

निष्कर्ष:

संचार माध्यम ने आज पुरे विश्व को एवं ग्राम में बदल दिया है, आधुनिक तकनीकि का महिला एवं पुरुष, युवा और वृद्ध सभी पर प्रभाव पड़ा है। प्रिंट मीडिया, रेडियो, टी0वी0, सिनेमा, फिल्में, इण्टरनेट, सोशल मीडिया, ये सभी मीडिया के घटकों के प्रयोग ने महिलाओं को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है। वर्तमान में ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाली महिलायें जो केवल उपभोग की वस्तु मानी जाती थीं, आज जागरूक होकर अपने अधिकारों की माँग कर रही हैं। आज महिलायें प्रत्येक क्षेत्र में एवं प्रत्येक स्तर पर पुरुषों से कमजोर नहीं हैं। भारतीय महिलायें विभिन्न माध्यमों से निरन्तर सशक्त हो रही है। मध्यकाल में जो महिलायें दासी थी, आज वह स्वतंत्र होकर भारतीय अर्थव्यवस्था को विकसीत करने में अपना योगदान दे रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

[1]. लवानिया, एम0एम0, भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर,

[2]. चोपड़ा, लक्ष्मेंद्र : जनसंचार का समाजशास्त्र, आधार प्रकाशन, पंचकूला (हरियाणा), 2002,

[3]. हीगल, डॉ0 आशा, जैन, डॉ0 मधु, पारीक, डॉ0 शुशीला : संचार के सिद्धान्त, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2009,

ISSN (Online) 2582-9327

IJARSCMT

International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology

Impact Factor: 5.781

Volume 3, Issue 2, February 2022

[4]. अरुण, डॉ0 एस0के0 एवं त्यागी डॉ0 बी0डी0 : जनसंचार एवं कृषि पत्रकारिता,रामा पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, 2014,

[5]. उपाध्याय, डॉ0 अनिल कुमार : पत्रकारिताएवं विकास संचार, विजय प्रकाशन मंदिर 2001,

[6]. आर्य डॉ0 नरेन्द्र कुमार, मीडिया विमर्श, वर्ष 7, अंक 28, जुलाई–सितम्बर 2013,

[7]. यादव, राम गणेश : भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं विकास, ओरिएंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली,

[8]. सेतिया, सुभाष : गाँवों में सूचना टेक्नोलाजी का प्रभाव, कुरुक्षेत्र, जनवरी 2012,

[9]. जोशी, हेमंत : सामाजिक बदलाव में रेडियों, मोबाइल इण्टरनेट, कुरुक्षेत्र, दिसम्बर 2011